



# Ambika kumari

28 Oct 2024

11:21 AM

Patan

Model: Web-MyKundli

Order No: 121216501

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 28/10/2024  
दिन \_\_\_\_\_: सोमवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 11:21:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 13:28:03 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Patan  
राज्य \_\_\_\_\_: Bihar  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 24:14:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 84:12:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:06:48 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 11:27:48 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:16:17 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 13:56:05 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:57:46 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:16:03 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:18:16 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: हेमन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 11:05:53 तुला  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 22:43:15 धनु

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: सिंह - सूर्य  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पू०फाल्गुनी - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शुक्र  
योग \_\_\_\_\_: ऐन्द्र  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: मूषक  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: वनचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: श्वान  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: टू-टुनटुन  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: रजत - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: वृश्चिक

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1946	कार्तिक	6
पंजाबी	संवत : 2081	कार्तिक	12
बंगाली	सन् : 1431	कार्तिक	11
तमिल	संवत : 2081	आइपसी	12
केरल	कोल्लम : 1200	तुलम	12
नेपाली	संवत : 2081	कार्तिक	12
चैत्रादि	संवत : 2081	कार्तिक	कृष्ण 11
कार्तिकादि	संवत : 2081	आश्विन	कृष्ण 11

### पंचांग

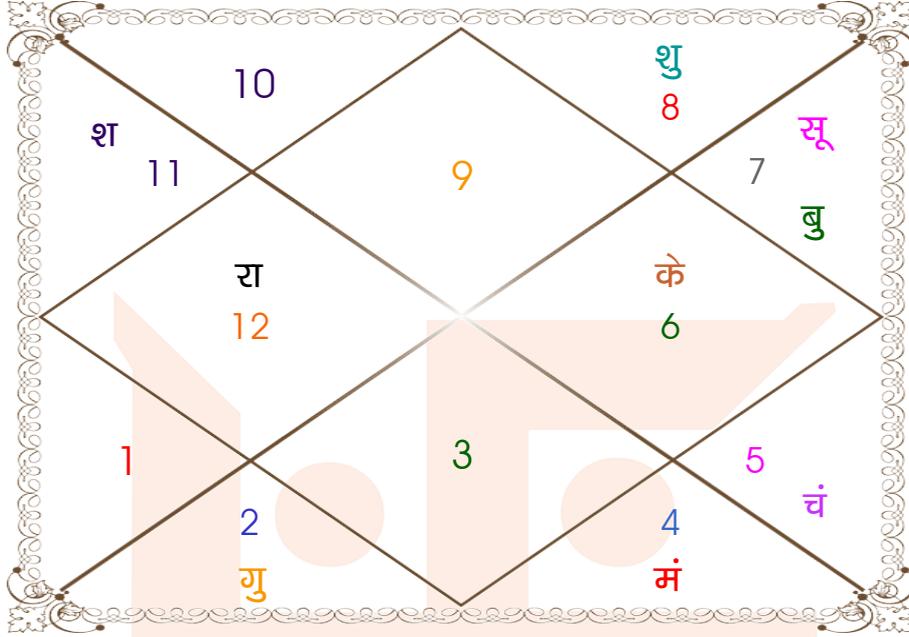
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 11  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:51:02  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 12  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : पू०फाल्गुनी  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 15:23:45 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पू०फाल्गुनी  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : ब्रह्म  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 06:46:51 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : ऐन्द्र  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बालव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:51:02 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 57:22:41  
भभोग \_\_\_\_\_ : 67:29:33  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शुक्र 2 वर्ष 11 मा 25 दि

### घात चक्र

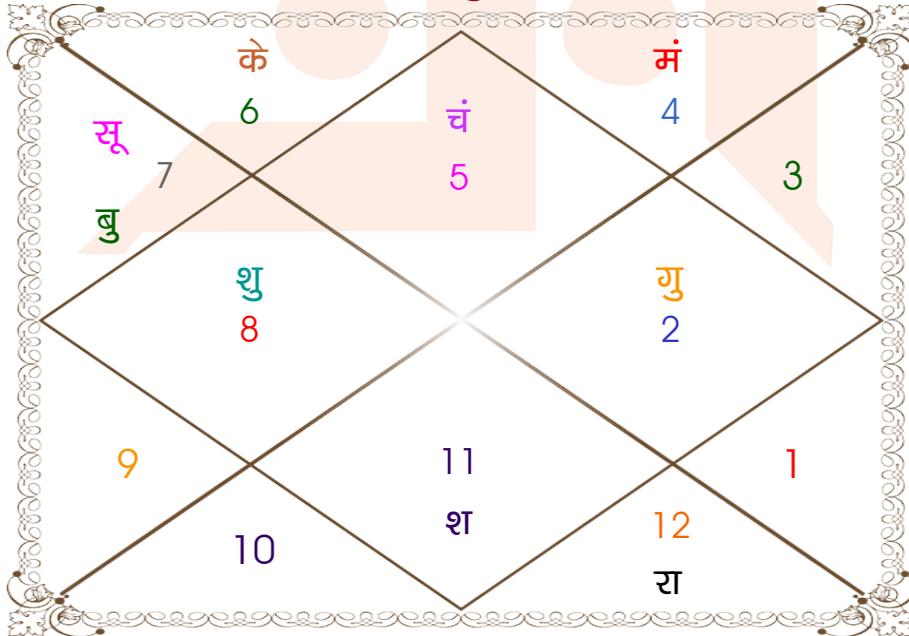
मास \_\_\_\_\_ : ज्येष्ठ  
तिथि \_\_\_\_\_ : 3-8-13  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मूल  
योग \_\_\_\_\_ : धृति  
करण \_\_\_\_\_ : बव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मेष  
लग्न \_\_\_\_\_ : मीन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : धनु  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
मंगल \_\_\_\_\_ : मकर  
बुध \_\_\_\_\_ : तुला  
गुरु \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मीन  
शनि \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
राहु \_\_\_\_\_ : मेष

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुण्डली

रा		गु	
श			मं
			चं
ल	शु	बु सू	के

## लग्न कुण्डली

गु		रा
		श
मं		
चं	सू बु	ल शु

विंशोत्तरी  
शुक्र 2वर्ष 11मा 25दि  
शुक्र

28/10/2024

25/10/2127

शुक्र	24/10/2027
सूर्य	23/10/2033
चन्द्र	24/10/2043
मंगल	23/10/2050
राहु	23/10/2068
गुरु	23/10/2084
शनि	25/10/2103
बुध	24/10/2120
केतु	25/10/2127

योगिनी

उल्का 0वर्ष 10मा 22दि  
सिद्धा

20/09/2025

20/09/2032

सिद्धा	30/01/2027
संकटा	20/08/2028
मंगला	30/10/2028
पिंगला	22/03/2029
धान्या	21/10/2029
भामरी	01/08/2030
भद्रिका	22/07/2031
उल्का	20/09/2032

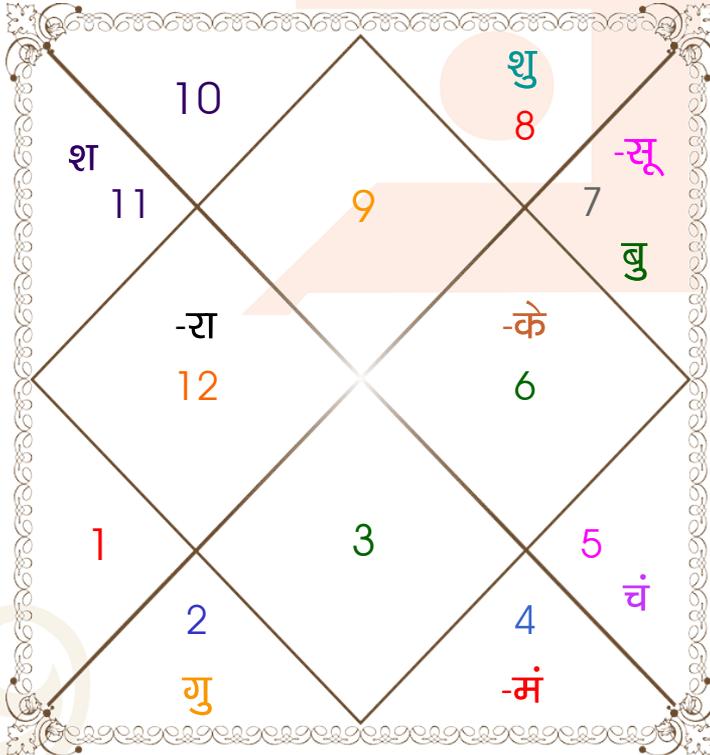
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	22:43:15	359:16:07	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
सूर्य			तुला	11:05:53	00:59:55	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	नीच राशि
चंद्र			सिंह	24:40:34	11:48:53	पूर्वाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	मित्र राशि
मंगल			कर्क	03:15:32	00:23:24	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	नीच राशि
बुध			तुला	27:52:12	01:27:24	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
गुरु	व		वृष	26:32:13	00:03:45	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			वृश्चि	18:23:02	01:12:14	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	सम राशि
शनि	व		कुंभ	18:46:54	00:01:53	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	मूलत्रिकोण
राहु			मीन	12:16:08	00:01:32	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	मंगल	सम राशि
केतु			कन्या	12:16:08	00:01:32	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	01:50:36	00:02:17	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	---
नेप	व		मीन	03:22:20	00:01:14	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
प्लूटो			मक	05:30:06	00:00:28	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	---
दशम भाव			तुला	06:57:31	--	स्वाति	--	15	शुक्र	राहु	राहु	--

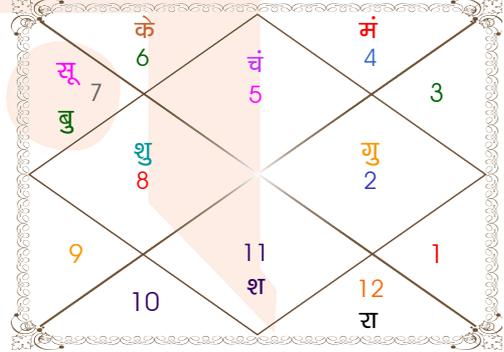
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:12:11

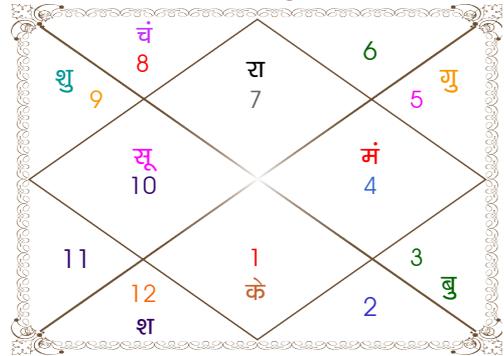
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 10:05:38	धनु 22:43:15
2	मकर 10:05:38	मकर 27:28:01
3	कुम्भ 14:50:23	मीन 02:12:46
4	मीन 19:35:08	मेष 06:57:31
5	मेष 19:35:08	वृष 02:12:46
6	वृष 14:50:23	वृष 27:28:01
7	मिथुन 10:05:38	मिथुन 22:43:15
8	कर्क 10:05:38	कर्क 27:28:01
9	सिंह 14:50:23	कन्या 02:12:46
10	कन्या 19:35:08	तुला 06:57:31
11	तुला 19:35:08	वृश्चिक 02:12:46
12	वृश्चिक 14:50:23	वृश्चिक 27:28:01

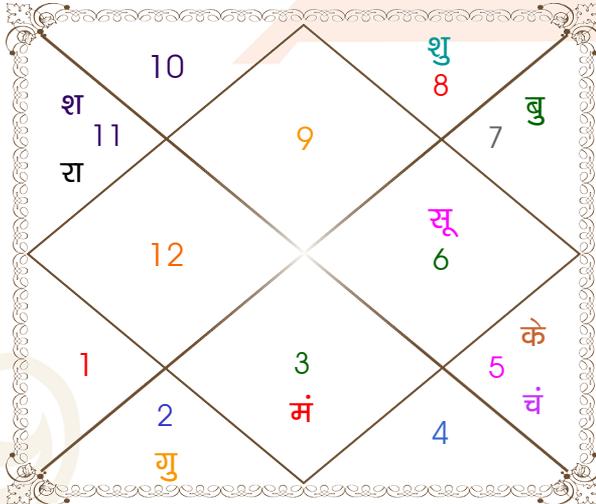
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	22:43:15
2	मकर	28:08:40
3	मीन	04:39:24
4	मेष	06:57:31
5	वृष	03:58:09
6	वृष	28:04:56
7	मिथुन	22:43:15
8	कर्क	28:08:40
9	कन्या	04:39:24
10	तुला	06:57:31
11	वृश्चिक	03:58:09
12	वृश्चिक	28:04:56

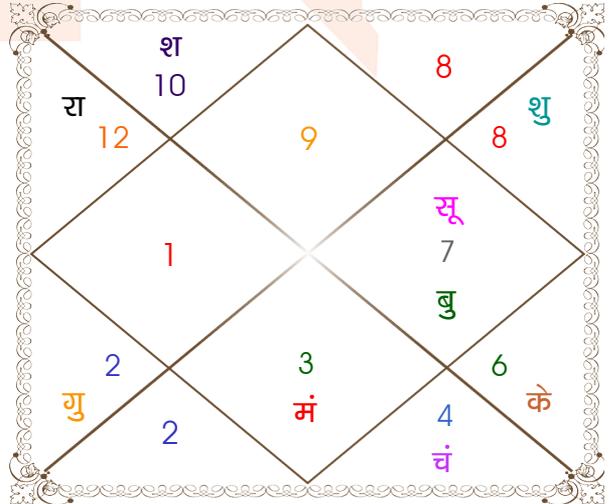
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 2 वर्ष 11 मास 25 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
28/10/2024	24/10/2027	23/10/2033	24/10/2043	23/10/2050
24/10/2027	23/10/2033	24/10/2043	23/10/2050	23/10/2068
00/00/0000	सूर्य 10/02/2028	चंद्र 23/08/2034	मंगल 21/03/2044	राहु 06/07/2053
00/00/0000	चंद्र 11/08/2028	मंगल 25/03/2035	राहु 08/04/2045	गुरु 29/11/2055
00/00/0000	मंगल 17/12/2028	राहु 22/09/2036	गुरु 15/03/2046	शनि 05/10/2058
00/00/0000	राहु 10/11/2029	गुरु 22/01/2038	शनि 24/04/2047	बुध 23/04/2061
00/00/0000	गुरु 30/08/2030	शनि 24/08/2039	बुध 20/04/2048	केतु 12/05/2062
00/00/0000	शनि 12/08/2031	बुध 22/01/2041	केतु 16/09/2048	शुक्र 12/05/2065
28/10/2024	बुध 17/06/2032	केतु 23/08/2041	शुक्र 16/11/2049	सूर्य 05/04/2066
बुध 23/08/2026	केतु 23/10/2032	शुक्र 24/04/2043	सूर्य 24/03/2050	चंद्र 05/10/2067
केतु 24/10/2027	शुक्र 23/10/2033	सूर्य 24/10/2043	चंद्र 23/10/2050	मंगल 23/10/2068

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
23/10/2068	23/10/2084	25/10/2103	24/10/2120	25/10/2127
23/10/2084	25/10/2103	24/10/2120	25/10/2127	00/00/0000
गुरु 11/12/2070	शनि 27/10/2087	बुध 22/03/2106	केतु 22/03/2121	शुक्र 23/02/2131
शनि 23/06/2073	बुध 06/07/2090	केतु 19/03/2107	शुक्र 22/05/2122	सूर्य 23/02/2132
बुध 29/09/2075	केतु 15/08/2091	शुक्र 17/01/2110	सूर्य 27/09/2122	चंद्र 24/10/2133
केतु 04/09/2076	शुक्र 14/10/2094	सूर्य 24/11/2110	चंद्र 28/04/2123	मंगल 24/12/2134
शुक्र 06/05/2079	सूर्य 26/09/2095	चंद्र 24/04/2112	मंगल 24/09/2123	राहु 24/12/2137
सूर्य 22/02/2080	चंद्र 27/04/2097	मंगल 21/04/2113	राहु 12/10/2124	गुरु 24/08/2140
चंद्र 23/06/2081	मंगल 05/06/2098	राहु 09/11/2115	गुरु 18/09/2125	शनि 25/10/2143
मंगल 30/05/2082	राहु 12/04/2101	गुरु 14/02/2118	शनि 27/10/2126	बुध 29/10/2144
राहु 23/10/2084	गुरु 25/10/2103	शनि 24/10/2120	बुध 25/10/2127	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 2 वर्ष 11 मा 29 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शुक्र - बुध</b> 28/10/2024 23/08/2026	<b>शुक्र - केतु</b> 23/08/2026 24/10/2027	<b>सूर्य - सूर्य</b> 24/10/2027 10/02/2028	<b>सूर्य - चंद्र</b> 10/02/2028 11/08/2028	<b>सूर्य - मंगल</b> 11/08/2028 17/12/2028
00/00/0000 28/10/2024 शुक्र 06/11/2024 सूर्य 28/12/2024 चंद्र 24/03/2025 मंगल 23/05/2025 राहु 26/10/2025 गुरु 13/03/2026 शनि 23/08/2026	केतु 17/09/2026 शुक्र 27/11/2026 सूर्य 19/12/2026 चंद्र 23/01/2027 मंगल 17/02/2027 राहु 22/04/2027 गुरु 18/06/2027 शनि 24/08/2027 बुध 24/10/2027	सूर्य 29/10/2027 चंद्र 07/11/2027 मंगल 14/11/2027 राहु 30/11/2027 गुरु 15/12/2027 शनि 01/01/2028 बुध 17/01/2028 केतु 23/01/2028 शुक्र 10/02/2028	चंद्र 25/02/2028 मंगल 07/03/2028 राहु 03/04/2028 गुरु 28/04/2028 शनि 27/05/2028 बुध 22/06/2028 केतु 02/07/2028 शुक्र 02/08/2028 सूर्य 11/08/2028	मंगल 18/08/2028 राहु 06/09/2028 गुरु 23/09/2028 शनि 14/10/2028 बुध 01/11/2028 केतु 08/11/2028 शुक्र 30/11/2028 सूर्य 06/12/2028 चंद्र 17/12/2028
<b>सूर्य - राहु</b> 17/12/2028 10/11/2029	<b>सूर्य - गुरु</b> 10/11/2029 30/08/2030	<b>सूर्य - शनि</b> 30/08/2030 12/08/2031	<b>सूर्य - बुध</b> 12/08/2031 17/06/2032	<b>सूर्य - केतु</b> 17/06/2032 23/10/2032
राहु 04/02/2029 गुरु 20/03/2029 शनि 11/05/2029 बुध 26/06/2029 केतु 16/07/2029 शुक्र 08/09/2029 सूर्य 25/09/2029 चंद्र 22/10/2029 मंगल 10/11/2029	गुरु 19/12/2029 शनि 04/02/2030 बुध 17/03/2030 केतु 03/04/2030 शुक्र 22/05/2030 सूर्य 05/06/2030 चंद्र 30/06/2030 मंगल 17/07/2030 राहु 30/08/2030	शनि 24/10/2030 बुध 12/12/2030 केतु 01/01/2031 शुक्र 28/02/2031 सूर्य 17/03/2031 चंद्र 15/04/2031 मंगल 05/05/2031 राहु 26/06/2031 गुरु 12/08/2031	बुध 25/09/2031 केतु 13/10/2031 शुक्र 03/12/2031 सूर्य 19/12/2031 चंद्र 14/01/2032 मंगल 01/02/2032 राहु 18/03/2032 गुरु 29/04/2032 शनि 17/06/2032	केतु 24/06/2032 शुक्र 16/07/2032 सूर्य 22/07/2032 चंद्र 02/08/2032 मंगल 09/08/2032 राहु 28/08/2032 गुरु 15/09/2032 शनि 05/10/2032 बुध 23/10/2032
<b>सूर्य - शुक्र</b> 23/10/2032 23/10/2033	<b>चंद्र - चंद्र</b> 23/10/2033 23/08/2034	<b>चंद्र - मंगल</b> 23/08/2034 25/03/2035	<b>चंद्र - राहु</b> 25/03/2035 22/09/2036	<b>चंद्र - गुरु</b> 22/09/2036 22/01/2038
शुक्र 23/12/2032 सूर्य 10/01/2033 चंद्र 09/02/2033 मंगल 03/03/2033 राहु 27/04/2033 गुरु 14/06/2033 शनि 11/08/2033 बुध 02/10/2033 केतु 23/10/2033	चंद्र 17/11/2033 मंगल 05/12/2033 राहु 20/01/2034 गुरु 01/03/2034 शनि 19/04/2034 बुध 01/06/2034 केतु 19/06/2034 शुक्र 08/08/2034 सूर्य 23/08/2034	मंगल 05/09/2034 राहु 07/10/2034 गुरु 04/11/2034 शनि 08/12/2034 बुध 07/01/2035 केतु 20/01/2035 शुक्र 24/02/2035 सूर्य 07/03/2035 चंद्र 25/03/2035	राहु 15/06/2035 गुरु 27/08/2035 शनि 22/11/2035 बुध 07/02/2036 केतु 10/03/2036 शुक्र 09/06/2036 सूर्य 07/07/2036 चंद्र 21/08/2036 मंगल 22/09/2036	गुरु 26/11/2036 शनि 11/02/2037 बुध 21/04/2037 केतु 20/05/2037 शुक्र 09/08/2037 सूर्य 02/09/2037 चंद्र 13/10/2037 मंगल 10/11/2037 राहु 22/01/2038

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

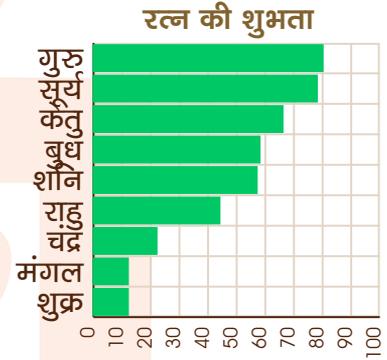
मूलांक	1
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	80%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	78%	धनार्जन, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	66%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
पन्ना	बुध	58%	धनार्जन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	57%	पराक्रम, धन
गोमेद	राहु	44%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग
मोती	चंद्र	22%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना
मूंगा	मंगल	12%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट, व्यय
हीरा	शुक्र	12%	व्यय, शत्रु व रोग, हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	24/10/2027	66%	0%	12%	64%	80%	38%	63%	53%	72%
सूर्य	23/10/2033	91%	34%	25%	58%	86%	0%	38%	19%	53%
चंद्र	24/10/2043	84%	47%	12%	64%	80%	12%	57%	19%	53%
मंगल	23/10/2050	84%	34%	38%	41%	86%	12%	57%	19%	72%
राहु	23/10/2068	66%	0%	0%	58%	80%	25%	63%	59%	53%
गुरु	23/10/2084	84%	34%	25%	41%	92%	0%	57%	44%	66%
शनि	25/10/2103	66%	0%	0%	64%	80%	25%	69%	53%	53%
बुध	24/10/2120	84%	0%	12%	70%	80%	25%	57%	44%	66%
केतु	25/10/2127	66%	0%	25%	58%	80%	25%	38%	19%	78%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----	-----

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया  
साढ़ेसाती प्रथम ढैया  
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया  
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

#### फल

सम  
अशुभ  
सम  
शुभ  
अशुभ

#### क्षेत्र

सुख  
दुर्घटना  
बदनामी  
व्यावसाय  
व्यय

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगी। साथ ही पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी। सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसे

मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर अष्टम् भाव में स्थित है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

### चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभातृवान् होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढदेही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरों से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए शुभ रहेंगी।

## मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए उद्यत रहेंगी।

## बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

## गुरु

षष्ठभावे में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

## शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक,

मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मि, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

### शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

### राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

### केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र  
( 28/10/2024 - 24/10/2027 )

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 28/10/2024 को आरम्भ और 24/10/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बारीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

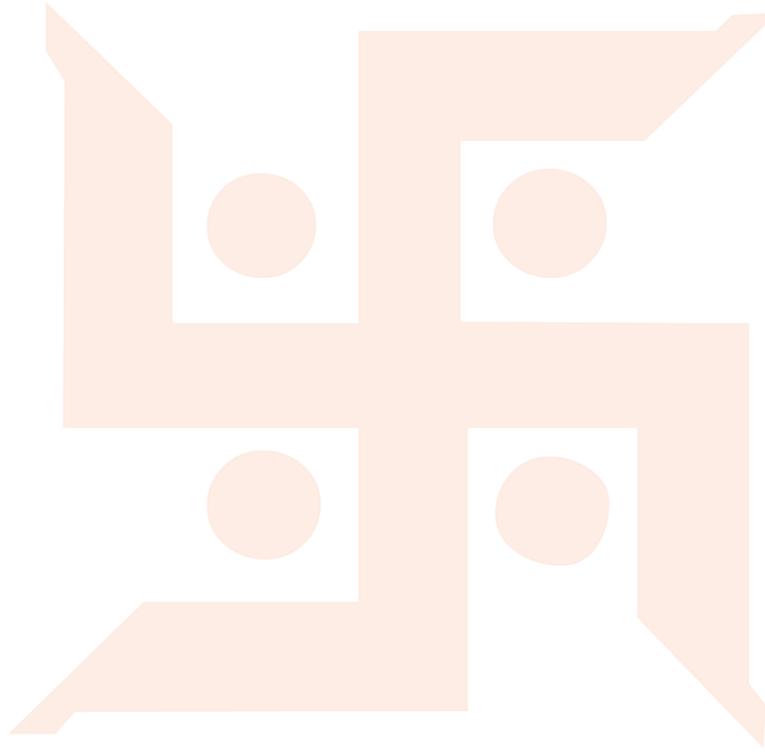
अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारिक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होंगे। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यिक गतिविधियां जारी रखेंगे।



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

**महादशा :- सूर्य**  
**( 24/10/2027 - 23/10/2033 )**

सूर्य की महादशा 24/10/2027 को आरंभ और 23/10/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य एकादश भाव में अवस्थित है। सूर्य सम्पत्ति, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है जबकि एकादश भाव सभी प्रकार के लाभ, मनोकामनाओं की पूर्ति, शिक्षा तथा भौतिक सुखों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपको धन, प्रभावशाली मित्रों, पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में रोगों की प्रतिरोध शक्ति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रखने के लिए आपको सात्विक और सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और हृदयगति की पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अतिशयता का परित्याग करना चाहिए और जीवन के प्रति आपकी सोच सकारात्मक होनी चाहिए ताकि इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रह सके।

**अर्थ :**

आप भाग्यशाली होंगे और आपको पर्याप्त आर्थिक संसाधन प्राप्त होंगे। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको पिता से लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अधिक प्रयास किये बगैर आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। दशा ज्यों-ज्यों प्रगति करेगी त्यों-ज्यों आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। किन्तु, आपको फिजूलखर्ची के प्रति सावधान रहना चाहिए क्योंकि आप स्वभाव से उदार हैं।

**व्यवसाय :**

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता और लाभ मिलेंगे। आपको अधिक परिश्रम किये बगैर सफलता मिलेगी। आप सरकारी सेवा में अच्छा करेंगे। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों और संस्थानों में प्रबंधक के पद के लिये सर्वाधिक योग्य हैं। संगठन से सम्बद्ध कोई भी कार्य आपके अनुकूल होगा। रत्नों का व्यवसाय अथवा सम्पत्ति की परिरक्षा का कार्य लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोगों के कार्य-स्थान में वातावरण सौहार्दपूर्ण रहेगा, उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग तथा उच्चधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को स्व-प्रयास से धन तथा लाभ की प्राप्ति होगी। रत्न-आभूषण, धातु तथा बिजली के सामानों आदि के व्यापारियों के लिये यह दशा लाभदायक होगी।

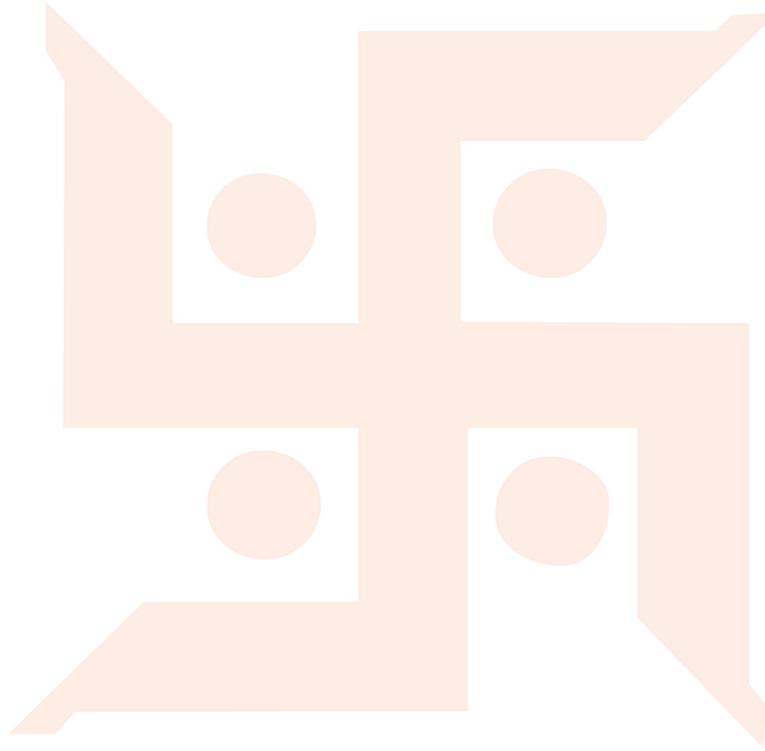
**परिवार :**

आपका बच्चों से गहरा लगाव है। आपको उनसे अत्यधिक सुख मिलेगा। इस दशा-काल में आप उनके ऊपर बड़ी सीमा तक निर्भर करेंगे। आपके जीवन साथी के साथ आपके सम्बन्ध बहुत मधुर होंगे। आपके जीवन साथी को सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और उनका भाग्योदय होगा। आपकी माता को किसी अप्रत्याशित धन की प्राप्ति और धर्मशास्त्रों में उनकी रुचि हो सकती है। आपके पिता स्वयं धनोपार्जन करेंगे, प्रसन्न रहेंगे और छोटी यात्राओं पर जाएंगे। आपके भाई-बहनों के लिये यह समय समृद्धिशाली रहेगा और आपके साथ उनके

संबंध मधुर रहेंगे ।

शिक्षा :

आप धार्मिक प्रवचन देंगे या उनका आयोजन करेंगे ।



**अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य**  
**( 24/10/2027 - 10/02/2028 )**

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/10/2027 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 10/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपको मान-सम्मान प्राप्त होगा। सरकार और सम्मानीय नागरिकों से मान्यता और प्रशंसा की उपलब्धि होगी। आपके मित्रों की संख्या पर्याप्त होगी। वे आपकी सहायता के लिए तत्पर रहेंगे और संभ्रांत वर्ग के विद्वान व्यक्ति होंगे। जो भी काम आप करेंगे, सफलता मिलेगी। सट्टेबाजी से या संतान के कारण धन प्राप्त होगा। मंत्रों और सिद्धियों में आपकी रुचि बढ़ेगी। जीवनसाथी की संपदा में वृद्धि होगी। व्यापार में साझेदार के साथ संबंध मधुर रहेंगे। विद्यार्थियों के लिए समय आकांक्षाओं की पूर्ति ओर परीक्षा में कीर्तिमान स्थापित करने का है। विरोधी परास्त होंगे। जीवनसाथी को मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

मसालेदार भोजन से परहेज करें क्योंकि पेट खराब हो सकता है। कैल्शियम की कमी से शरीर के नीचे के अंगों में कोई समस्या हो सकती है। इसके लिए दुग्ध, शहद का सेवन अधिक करें और अग्नि को दूध अर्पित करें। आटे, गुड़ और तांबे का दान करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र**  
**( 10/02/2028 - 11/08/2028 )**

आपकी सूर्य की महादशा 24/10/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 11/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपका भाग्य चमकेगा। आप धनी और सुखी रहेंगे। पुश्तैनी जायदाद से लाभ होगा। माता-पिता से प्रसन्नता प्राप्त होगी। विद्या, लेखन, प्रकाशन और शोध से प्रसिद्धि मिल सकती है। लंबी यात्राओं से लाभ प्राप्त हो सकता है। धर्म और अध्यात्म में आपकी रुचि रहेगी।

भाई-बहनों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। वरिष्ठ व्यक्तियों से लाभप्रद संबंध बन सकते हैं। संतान भाग्यशाली रहेगी। संतान का जन्म भी संभव है। आपके पिता के अधिकार और शक्ति बढ़ेंगे। बड़े भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। विद्यार्थीगणों के ज्ञान का दायरा बढ़ेगा।

इस अंतर्दशा में सफलता, आय, प्रभाव, शुभ उत्सव, मान, सम्मान, शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य आदि में प्रगति होगी। शुभत्ववर्धन हेतु श्वेत वस्तुओं का दान करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल  
( 11/08/2028 - 17/12/2028 )**

आपकी सूर्य की महादशा 24/10/2027 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 17/12/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप में उत्तम कार्यशक्ति और ऊर्जा मौजूद रहेंगी। खूब धन कमाएंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है या सेवानिवृत्ति/बोनस आदि से धन प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी के परिवार या व्यापार में साझेदार के माध्यम से धन प्राप्त हो सकता है। स्पर्धा परीक्षा में सफलता मिल सकती है। सेवारत जातकों को कठिन परिश्रम करना होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यवसायी नये अनुबंध प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

बड़े भाई-बहनों को धनलाभ होगा। छोटे भाई-बहन प्रतिस्पर्धा में सफल हो सकते हैं। पिता के खर्च बढ़ेंगे। उन्हें छोटी-मोटी चोटों से सावधान रहना चाहिए। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपके पुत्र-पुत्रियों की प्रोन्नति होकर उच्च पद की प्राप्ति होगी। तकनीकी विषय उनके लिए उत्तम रहेंगे। मामापक्ष के लोग जायदाद या वाहन की खरीद/बिक्री कर सकते हैं या कमीशन कार्य कर सकते हैं। शत्रु आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं मगर कामयाब नहीं होंगे।

आपको नेत्ररोग, गठिया और मूत्रतंत्र की व्याधियों से सावधान रहना चाहिए। मामूली कष्टों से बचने के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें, मंगलवार को उपवास करें और लाल वस्तुओं का दान करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

**अंतर्दशा :- सूर्य - राहु  
( 17/12/2028 - 10/11/2029 )**

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/10/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 17/12/2028 को प्रारंभ होकर 10/11/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में जायदाद से अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। निवास में परिवर्तन हो सकता है। विदेशियों से संपर्क/व्यापार संभव है। आपकी यात्रा होगी; विदेश भी जा सकते हैं। तीर्थयात्राएं होंगी। कार्य में व्यस्त रहेंगे और धन कमाएंगे।

जीवनसाथी के कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। उनके साथ अच्छे संबंध बनाये रखने का प्रयास करें। पिता को स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना चाहिए। भाई-बहनों को अचानक धन का लाभ होगा। आपकी संतान को अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। उन्हें ज्वर आदि मामूली बीमारी हो सकती है। उनके खर्च बढ़ सकते हैं। यात्रा की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो वेतन में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं की साख बढ़ेगी। व्यापारियों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अधिक प्रयास करने होंगे। आपके मामा पक्ष के लोग भाग्यशाली रहेंगे।

आपको छाती के मामूली रोग हो सकते हैं; स्वास्थ्य का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

### अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु ( 10/11/2029 - 30/08/2030 )

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/10/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 10/11/2029 को प्रारंभ होकर 30/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। सब सुख उपलब्ध रहेंगे। मामापक्ष से लाभ होगा। आप सबकी सहायता करेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। ऋण प्राप्त हो सकता है। आप धनी, जायदाद से युक्त होंगे ; उच्च पद प्राप्त होगा।

जीवनसाथी की यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे, अचल संपत्ति होगी, जीवन सुखमय होगा। आपके पिता को उच्चपद मिलेगा। माता की यात्राएं होंगी, पत्र व्यवहार आदि बढ़ेंगे। भाई-बहनों की अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी, लाभकारी परिवर्तन, प्रसिद्धि की संभावना है। आपकी संतान की कार्यप्रणाली उत्तम रहेगी, लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहतों का समर्थन मिलेगा। नयी नौकरी या अधिक वेतन की संभावना है। परामर्शदाताओं का समय सौभाग्यशाली रहेगा। व्यापारीगण प्रगति करेंगे और धनवान बनेंगे।

जिगर, तिल्ली, श्वासतंत्र के रोगों और मोटापे से बचाव करें। बुरे वक्त से बचने के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें और पीली वस्तुओं का दान करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः

### अंतर्दशा :- सूर्य - शनि ( 30/08/2030 - 12/08/2031 )

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 30/08/2030 को प्रारंभ होगी और 12/08/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी धर्म और सेवा कार्य में रुचि होगी। छोटे भाई-बहनों का

विवाह हो सकता है। पिता के साथ मधुरता बनाये रखने के लिए प्रयास करना होगा। संतान के साथ भी संबंध बिगड़ सकते हैं। इस अवधि में किये निवेश की समीक्षा सावधानीपूर्वक करनी होगी। आपकी संन्यास और योग में रुचि होगी। खर्चे अधिक होंगे, मगर आय भी बनी रहेगी।

जीवनसाथी भाग्यशाली होंगे, धन प्रचुर होगा। आपके पिता को साझेदारों से लाभ होगा, उच्च पद प्राप्त करेंगे। माता को धन मिलेगा, लंबी यात्राएं होंगी। भाई-बहनों के विवाह हो सकते हैं या शिशु का जन्म संभव है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। परामर्शदाता स्पर्धा में विजयी रहेंगे। व्यापारियों को ठेस लाभ होगा।

कान और श्वसन तंत्र के रोगों से सावधान रहें। कष्ट से छुटकारे के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

